12/30/2014

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

VOL III Issues VI

NOV-DEC
2014

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

Chief-Editor:

Ubale Amol Baban

ISSN : 2277-8721

Impact factor:0.987

| www.aarhat.com

ISSN : 2277-8721
Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)
Bi-Monthly Reviewed Journal Vol-III Issues VI Nov-Dec 2014

हिंदी को विश्व भाषा बनाने में तकनीक और इंटरनेट का योगदान

Research paper in Hindi

डॉ. काजल पाण्डे

सारांश:

आजकल पूरी दुनिया में तकनीक जैसे मोबाइल, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, कंप्यूटर आदि के साथ ही इंटरनेट का भी उपयोग हो रहा है। इस तकनीक और इंटरनेट के योगदान से भाषा के क्षेत्र में हिंदी को भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लाने का प्रयास किया जा रहा है और जिसमें पूरा विश्व इसको अपनाने के प्रयास में कार्यरत है। देश में सामाजिक, आर्थिक विकास की क्रांति लाने में तथा डिजिटल खाई को पाटने में सर्वाधिक योगदान हिंदी का ही है। हिंदी को विश्व व्यापी बनाने तथा जन-जन की भाषा बनाने की दिशा में व्यापक पैमाने पर कारगर ढ़ंग से यदि किसी का योगदान है तो वे हैं तकनीक और इंटरनेट।

प्रस्तावना:

तकनीक और इंटरनेट के सहारे पूरी दुनिया एक वैश्विक गाँव में तब्दील हो रही है और स्थलीय व भौगोलिक दूरियां अपनी अर्थवत्ता खो रहीं हैं। अपनी कार्य निपुणता तथा निवेश एवं उत्पादन के समीकरण की प्रबल संभावना को देखते हुए ही भारत निकट भविष्य की विश्व शक्ति के रूप में देखा जाने लगा है। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अंतरराष्ट्रीय स्थिति हिंदी के लिए वरदान सदृश है। यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती-उपस्थिति हिंदी की स्थितिका भी उन्नयन कर रही है लेकिन साथ ही साथ आज तकनीक और

इंटरनेट के माध्यम से हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्वभाषा का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है।

तकनीक और इंटरनेट न केवल लोगों को नजदीक ले आए हैं बल्कि सूचना संपन्न कराने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रक्रिया ने सूचना तक पहुंच का लोकतंत्रीकरण किया है। शहरी संपन्न और ग्रामीण वंचित वर्ग के बीच व्याप्त तकनीकी खाई को पाटने के क्षेत्र में यह व्यवस्था सबसे शक्तिशाली तकनीक के रूप में उभरी है।

भाषा अध्ययन ने माइक्रोसॉफ्ट - देश के दक्षिणराज्यों पूर्वी-, दक्षिण ही में राष्ट्रों एशियाई-नहीं, आस्ट्रेलिया, जापान, जर्मनी और अमेरिका जैसे विकासशील देशों में भी, ज्ञानसंस्कृति-, विज्ञापन एवं व्यावसायिक प्रगति के लिए हिंदी भाषा अध्ययन को गंभीरतापूर्वक स्वीकार किया है। विश्व के सैंकड़ों छोटे बड़े क़ेंद्रों में विश्वविद्यालय स्तर से लेकर शोध स्तर तक हिंदी के-अध्यापन-अध्ययन की व्यवस्था हुई है जिसमें इंटरनेट और कंप्यूटर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी विश्व के प्राय सभी महत्त्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन अध्यापन में : विश्वविद्यालयों और स् 600 से अधिक देशों के लगभग 40 भागीदार है। विदेशों मेंकूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। चीन , जापान, दक्षिण कोरिया, पोलैंड, बुल्गारिया, रोमानिया, रूस, जर्मनी, यू .के . और अमरीका में स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी पढ़ाई जा रही है । मारीशस, फिजी, त्रिनिडाड एवं टोबेगो, गयाना, सूरीनाम, मंगोलिया, उव्रेन, उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, सिंगापुर, मलेशिया, थाइलैंड, इंडोनेशिया, म्यामां, श्रीलंका और खाड़ी के देशों में मुख्यतः स्कूल स्तर पर अथवा स्वैच्छिक संगठनों द्वारा हिंदी पढ़ाई जा रही है। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन पाठन हो रहा है। विदेशों-में हिंदी सीखने की ललक है जिसके फलस्वरूप पाठ्यक्रमों में श्रव्य दृश्य तथा मुद्रित सामग्री उपलब्ध कराई जाती है जिनमें-भारतीय संस्कृति, इतिहास और दर्शनशास्त्र पर हिंदी में लिखी पुस्तकें , हिंदी पाठय़ पुस्तकें, बच्चों के लिए कहानियों की पुस्तकें , शब्दकोश, हिंदी शिक्षण किट , सी डी , कंप्यूटर के लिए हिंदी साफ्टवेयर शामिल हैं।

हिंदी सिनेमा - आज जब वीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियाँ21 प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व- एवं भाषाएँ आदान मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर रही है। तकनीक और इंटरनेट के युग में हिंदी फिल्मों तथा गानों ने विश्व में हिंदी के प्रसार में अप्रतिम योगदान दिया है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हो रहा है। विदेशों में छात्रों को हिंदी फिल्मों को देखकर तथा हिंदी फिल्मी गानों को सुनकर हिंदी सीखने में काफी मदद मिलती है। सन् 1995 के बाद से टेलीविजन के चैनलों से प्रसारित हिंदी कार्यक्रमों की लोकप्रियता भी बढ़ी

है। जिन सेटेलाइट चैनलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरम्भ केवल अंग्रेजी भाषा से किया था; उन्हें अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा। अब स्टार प्लस , जी.वी.टी., ज़ी न्यूज़, स्टार न्यूज़, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक आदि टी चैनल अपने कार्यक्रम हिंदी में दे रहे हैं। दक्षिण.वी. पूर्व एशिया तथा खाड़ी के देशों के कितने दर्शक इन हिंदी कार्यक्रमों को देखते हैं। अभी तक हिंदी नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका और म्यांमार तक ही सीमित थी , लेकिन एशिया से बाहर यूरोप में भी भरपूर सम्मान मिल रहा है। जर्मनी में भी इसकी ललक पहले से ज्यादा बढ़ी है।

आज भारतीय भाषाओं में सर्वाधिक फिल्में बनती हैं। इनमें भी हिंदी में सबसे अधिक। देश नई तकनीक अपनाकर इन्हें अंतर्राष्टीय स्तर का- विदेश में इनकी लोकप्रियता है। नई- बनाया जा रहा है। आज सभी चैनल तथा फ़िल्म निर्माता अंग्रेजी क़ार्यक्रमों और फ़िल्मों को हिंदी में डब करके प्रस्तुत करने लगे हैं। जुरासिक पार्क जैसी अति प्रसिद्ध फ़िल्म को भी अधिक मुनाफ़े के लिए हिंदी में डब किया जाना जरूरी हो गया। इसके हिंदी संस्करण ने जितने पैसे कमाए उतने अंग्रेजी संस्करण ने पूरे विश्व में नहीं कमाए थे।

अनेक देश हिंदी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं , जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डॉयचे वेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिंदी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

यूरोप के देशों में कोलोन, बीबीसी, ब्रिटिश रेडियो, सनराइज, सबरंग के हिंदी सेवा कार्यक्रमों को हिंदी प्रेमी बड़े चाव से सुनते हैं। यूरोप के देशों में ऐसी गायिकाएँ हैं जो हिंदी फिल्मों के गाने गाती हैं तथा स्टेज शो करती हैं।

दिल्ली से प्रकाशित नवभारत टाइम्स में 11 सितंबर 2014 को लिखा गया कि बॉलीवुड के लिए जल्द ही दुनिया का सबसे बड़ा मार्केट खुलने जा रहा है। भारतीय फिल्में मंडारिन में डब होकर चीन में दिखाई जाएंगी और चीनी फिल्में भारतीय भाषाओं में रिलीज़ होंगी। चीन के फिल्म ब्यूरो के डायरेक्टर जनरल झांग होंगसेन ने बुधवार को भारत से आए पत्रकारों को बताया कि दोनों देश मिलकर फीचर फिल्में भी बनाएंगे और फिल्म तकनीक का भी लेनदेन करेंगे। धूम-3 ने तो युवाओं के बीच धूम मचाई ही, थ्री इडियेट्स ने भी कामयाबी के झंडे गाड़े। झांग ने बताया कि दोनों देश पहले से ही एक-दूसरे के यहाँ होने वाले फिल्म फेस्टिवल में शरीक होते रहे हैं।

सन् 1995 के बाद टेलिविजन के प्रसार के कारण अब विश्व के प्रत्येक भूभाग में हिंदी फिल्मों तथा हिंदी फिल्मी गानों की लोकप्रियता सर्वविदित है।

पत्र-पत्रिकाएँ - विश्व के ऐसे अनेक देश हैं जहाँ शताब्दियों पूर्व भारतीय जाकर बस गये थे और उनके वंशज आज भी वहाँ निवास करते हैं, इनमें से बहुत से ऐसे भी है जो अपने धर्म, संस्कार और भाषा से भावात्मक रूप में जुड़े हुए हैं। उन्हीं के द्वारा समय-समय पर हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ किया गया था, जो अनेक रूपों में आज भी हो रहा है। विदेशों में प्रवासी भारतीयों द्वारा हिंदी-पत्रकारिता के विकास की दिशा में तकनीक और इंटरनेट के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। समय-समय पर हिंदी पत्रकारिता के उन्नयन के लिए पत्र-पत्रिकाओं का इंटरनेट पर ऑनलाइन प्रकाशन आरम्भ किया जा रहा है। इनके मूल में हिंदी पत्रकारिता के प्रति निष्ठा और अंतर्राष्ट्रीय विकास की भावना निहित है। विदेशों से 25 से अधिक पत्रपत्रिकाएं- लगभग नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं जैसे कि नार्वे से "शांतिदूत", अमरीका से "हिंदी जगत" और "भारत संदेश ,"न्यूजीलैंड से "भारत दर्शनप" से .के. और यू "रवासी टाइम्स "। विदेश स्थित कुछ भारतीय मिशनों और स्वैच्छिक संगठनों द्वारा प्रकाशित हिंदी की पत्रिकाओं में , अन्य के साथ-साथ, बुल्गारिया से पत्रिका "मैत्री", यू तथा त्रिनिडाड "विविध भारत" नेपाल से "भारत भवन" से .के. पत्रिका शा "हिंदी निधि स्वर" एवं टोबेगो सेमिल हैं।

समाचार सेवा - बीबीसी हिंदी एक अन्तरराष्ट्रीय समाचार सेवा है। इसका आरम्भ 11 मई 1940 को हुआ। प्रारम्भ में यह सेवा रेडियो के माध्यम से संचालित होती थी। वर्तमान में ये सेवा रेडियो के साथ-साथ वेबसाइट एवं सोशल-साइटों पर भी संचालित हो रही है। दक्षिण एशिया और खाड़ी के देशों में बीबीसी के श्रोताओं की बड़ी संख्या है। तकनीक और इंटरनेट बीबीसी के लिए नए अवसर लेकर आए हैं, आप तक पहुंचने और ताज़ा समाचार पहुंचाने का अवसर। हर रोज़ हज़ारों लोग बीबीसी हिंदी वेबसाइट पर आते हैं। यह आंकड़ा बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है।

सम्मेलन – हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष विभिन्न देशों में क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। अभी तक नौ विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह ने सम्मेलन के लिए भेजे अपने संदेश में कहा भी था कि विश्व हिंदी सम्मेलनों की परंपरा को एक वैश्विक पहचान और गति मिली है। यह विश्व में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का सबूत है। इन सभी सम्मेलनों की जानकारी हमें इंटरनेट के माध्यम से मिलती है।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी जर्नल – हिंदी जर्नलों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय हिंदी जर्नल प्रकाशित किए जा रहे हैं जो इंटरनेट पर भी उपलब्ध हैं।

हिंदी सॉफ्टवेयर - माइक्रोसॉफ्ट ने वर्ष 1998 में वर्ड 2000 के दक्षिण पूर्वेशिया संस्करण में हिंदी को सीमित स्थान देकर हिंदी की शुरुआत की। टाइपिंग, फोंट, वेबसाइट (ई-लर्निंग, ई-कामर्स, ई-मेल, ई-मीडिया, ई-बैंकिंग, ई-प्रवेश, शब्दकोश, विश्वकोश, ब्लॉग, साहित्य, ई-बुक , मशीनी अनुवाद, ई–महाशब्दकोश, शब्दमाल, लिप्यंतरण, डेटा कनवर्टर , विभिन्न फॉण्टस , लिपिक इन , अक्षर–ब्रिज, शब्द–ज्ञान, गोल्डेन–डिक्ट आदि), जैसे अनेक ऑनलाइन एवं ऑफलाइन साधन भी हिंदी में उपलब्ध हैं। विश्वबाजार की भाषा अंग्रेजी में हजारों नए हिंदी शब्दों ने प्रवेश किया है , जिन्हें ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी में स्थान मिल चुका है। इससे हिंदी के विश्वभाषा बनने के रास्ते में मदद ही मिलती है। भाषाओं का यह अन्तर्मिश्रण हमें बताता है कि हिंदी में भी शब्दों के प्रवेश को लेकर संशय और शुद्धता की रक्षणशील भावनाएँ बहुत उपादेय नहीं है। अनुवाद के लिए गूगल ट्रांसलेटर का भी प्रयोग बहुत सराहनीय है जिसके माध्यम से हम किसी भी भाषा के साथ हिंदी में भी किसी भी क्षेत्र से संबंधित अनुवाद प्राप्त कर सकते हैं। हिंदी सहित स्थानीय भाषाओं में काम करने के लिए सॉफ्टवेयर का अभाव अब खत्म हो चुका है। आजकल किसी भी साक्षर को कम्प्यूटर में हिंदी में अपना काम निपटाते देखा जा सकता है।

मीडिया - इंटरनेट और तकनीक के तेजी से बढ़ते प्रसार ने मीडिया के कई आयाम स्थापित किए हैं। विशेष तौर पर वेब मीडिया का दायरा और व्यापक हुआ है। अब हर किसी के हाथ में इंटरनेट है और वे खबरों के लिए अखबारों के पन्ने कम पलटते हैं जबकि किसी वेबसाइट पर नजर डालना ज्यादा उचित समझते हैं। खास बात यह है कि इसमें हिंदी वेब मीडिया ने भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है। चूंकि यह आधुनिक मीडिया है, यही कारण है कि इसने समय में आए बदलाव के साथ कदम ताल किया है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने हिंदी भाषा का सशक्तीकरण तो किया ही है साथ ही मीडिया के अंतरराष्ट्रीय मंच पर हिंदी का व्यापक प्रसार भी किया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साधनों ने इस दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाई है।

विज्ञापन - जर्मन विमानन सेवा "लुफ्थांसा" का टीवी **विज्ञापन** भारतीय यात्रियों के साथ बेहतर तरीके से जुड़ने का प्रयास करता है। कंपनी ने पहली बार केवल भारत के लिए विज्ञापन तैयार किया है और इस विज्ञापन में उड़ान के दौरान भारतीय भोजन और हिंदी फिल्मों को दिखाया गया है।

संस्कृति - हिंदी भाषा और इसमें निहित भारत की सांस्कृतिक धरोहर इतनी सुदृढ़ और समृद्ध है कि इस ओर अधिक प्रयत्न न किए जाने पर भी इसकी भूमंडलीकरण की गति बहुत तेज है। लगभग हर देश में योग , ध्यान और आयुर्वेद के केंद्र खुल गए हैं जो दुनिया भर के लोगों को भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित करते हैं। ऐसी संस्कृति जिसे पाने के लिए हिंदी के रास्ते से ही पहुंचा जा सकता है।

विदेश मंत्रालय - विदेश मंत्रालय विदेशों में हिंदी प्रचार प्रसार में भी एक अहम भूमिका निभा रहा- है। विदेशमंत्री एस.एम .कृष्णा ने कहा है कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे त्वरित विकास के कारण भाषाओं को स्वयं को उसके अनुरूप ढालने की भी आवश्यकता हो रही है और यह हिंदी की अंतर्निहित शक्ति एवं दक्षता का ही प्रमाण है कि यह सूचना एवं प्रौद्योगिकी की भाषा के रूप में उभरी है। अत :इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हिंदी तेजी से एक महत्वपूर्ण वैश्विक भाषा के रूप में उभर रही है।

विदेश राज्य मंत्री, श्री आनंद शर्मा ने हिंदी वेबसाइट का आरंभ किया 2006 अगस्त 18 प्रसार के प्रयासों का- था। यह भारत और विदेश दोनों में मंत्रालय के दूरगामी एवं हिंदी के प्रचार पूरे विश (क) - माध्यम है। इससे सिद्ध होने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य इस प्रकार हैं्व में हिंदी संस्थाओं और स्कूलों के कार्य में मदद मिली ,(ख हिंदी से जुड़े कार्यव्रमों का कलैण्डर प्रदर्शित (वस्तु पर- हिंदी वेबसाइट की विषय (ग) और , करके प्रतियोगिता और भागीदारी को बढ़ावा मिला आदि। ,प्रयोक्ताओं के विचार प्राप्त हुए

यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार संप्रति विश्व के लगभग 137 देशों में हिंदी भाषा विद्यमान है। हिंदी भाषियों की कुल संख्या अनुमानत :सौ करोड़ है। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता मिली है। हिंदी भारत की नहीं, पूरे विश्व में एक विशाल क्षेत्र की भाषा है। भारतीयों ने अपनी कड़ी मेहनत , प्रतिभा और कुशाग्र बुद्धि से आज विश्व के तमाम देशों की उन्नति में जो सहायता की है उससे प्रभावित होकर विश्व के तमाम देश समझ गए हैं कि भारतीयों से अच्छे संबंध बनाने के लिए हिंदी सीखना कितना जरूरी है। अमरीकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने 114 मिलियन डॉलर की एक विशेष राशि अमरीका में हिंदी , चीनी और अरबी भाषाएं सीखाने के लिए स्वीकृत की है। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदी के महत्व को विश्व में कितनी गंभीरता से अनुभव किया जा रहा है।

हिंदी वेबसाइट - विश्व मंच पर हिंदी वेबसाइटों का निर्माण किया जा रहा है। तकनीक और इंटरनेट के इस युग में माइक्रोसॉफ्ट, याहू, रेडिफ आदि विदेशी कंपनियों ने अपनी वेबसाइट पर हिंदी भाषा को स्थान दिया है। बी.बी.सी .ने भी पंजाबी, बंगाली के साथ-साथ हिंदी में वेबसाइट विकसित की है। ई-कॉमर्स, ई-गवर्नेंस क्षेत्र में भी हिंदी का विकास हो रहा है। गूगल जैसा प्रचलित इंटरनेट सर्वर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी प्रसार के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी ब्लॉगों के माध्यम से भी हिंदी का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। अभी हाल ही में को 2014 अगस्त 27भारत सरकार ने हिंदी समेत देवनागरी लिपि वाली 8 भारतीय भाषाओं के लिए डोमेन नाम लॉन्च कर दिया है। अब इंटरनेट पर कोई वेबसाइट अपना नाम देवनागरी लिपि में रखते हुए पीछे. com या. in जैसे डोमेन की जगह. भारत रख सकती है।

जैसे registry.in को वेब ब्राउज़र में रजिस्ट्री.भारत लिखकर भी खोला जा सकता है। अब वेबसाइट के नाम देवनागरी लिपि का इस्तेमाल करने वाली भाषा हिंदी के साथ ही बोडो, डोगरी, कोंकणी, मैथिली, मराठी, नेपाली और सिंधी में भी रखे जा सकते हैं। श्री रवि शंकर प्रसाद अवं संचार ,मंत्री केंद्रीय माननीय , प्रौद्योगिकी सूचनातथा कानून एवं न्याय ने हुए करते शुभारंभ का नाम डोमेन भारत. कहा, 'यह पहल केवल 8 भाषाओं पर नहीं रुक जाएगी। मैंने विभाग से कहा है कि. भारत डोमेन सभी भारतीय भाषाओं में जल्द उपलब्ध होना चाहिए।' यकीनन वह दिन दूर नहीं जब जनमानस वेबसाइट और ई-मेल के पते भी हिंदी में उपयोग करने लगेगा।

वर्तमान समय, भारत और हिंदी के तीव्र एवं सर्वोन्मुखी विकास का द्योतन कर रहा है और हम सबसे यह अपेक्षा कर रहे हैं कि हम जहाँ भी हैं , जिस क्षेत्र में भी कार्यरत हैं वहाँ ईमानदारी से हिंदी और देश के विकास में हाथ बटाएँ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि तकनीक और इंटरनेट के इस युग में अंतरराष्ट्रीय फलक पर हिंदी ने अपनी भूमिका खुद तय कर ली है। जिस गति तथा आंतरिक ऊर्जा के साथ विश्व स्तर पर अग्रसर है उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि हमारी जन-जन की राजभाषा हिंदी, राष्ट्रभाषा के स्तर से विश्वभाषा तभी बन सकती है जब विदेशों ,विदेशियों और देश के गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों के बीच तकनीक और इंटरनेट के सहयोग से हिंदी का प्रचार-प्रसार किया जाए।

संदर्भ

1. ओझा, डी.डी/कौशिक ओमप्रकाश, दूरसंचार एवं सूचना एवं सूचना प्रौद्योगिकी, ज्ञान गंगा 2001

3. शर्मा प्रहलाद, सूचना प्रौद्योगिकी, पंचशील प्रकाशन 2005

4. हरिमोहन/आशा मोहन, सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटर और अनुसंधान, तक्षशिला प्रकाशन 2011

5. सिंह शंकर, सूचना प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम, साईबर टेक पब्लिकेशन 2002

6. गर्ग सी. एल., सूचना एवं दूरसंचार प्रौद्योगिकी, आकाशगंगा प्रकाशन 2011

7. शर्मा बी.डी., शिक्षा तथा सूचना तकनीकी, ओमेगा पब्लिकेशन्स 2009

8. चौधरी पंकज, भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, संस्कार साहित्य 2008

9. सिंह शंकर, सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट, पूर्वांचल प्रकाशन 2007

10. सिंघल विनीता, सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में करियर, नेशनल बुक ट्रस्ट 2008

11. मिश्र डॉ. राजेंद्र, प्रयोजनमूलक हिंदी और जनसंचार, पृष्ठ–20

12. कुंदरा बलवीर, जनसंचार बदलते परिप्रेक्ष्य में, पृष्ठ–5

13. संपा वंद्योपाध्याय प्रणव कुमार, भाषा, बहुभाषिता और हिंदी, पृष्ठ–14

14. शर्मा सतीश, संचार माध्यमों की भाषा और नई हिंदी, पृष्ठ–214

15. मोहन सुमित, मीडिया लेखन, पृष्ठ–73–74

16. विदेश मंत्रालय की हिंदी वेबसाइट www.mea.gov.in

17. http://hindimedia.in/3/news/Increased-importance-of-Hindi-in-foreign-embassies

18. http://hi.wikibooks.org/wiki

19. http://hindi.webdunia.com/

20. http://www.jagran.com/

21. http://www.pravakta.com/

22.http://www.abhivyakti-hindi.org/

23.http://navbharattimes.indiatimes.com/

Copyrights @ डॉ. काजल पाण्डे.This is an open access reviewed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provide the original work is cited.